

## भारत का सांस्कृतिक पतन

समूचा विश्व भारतीय संस्कृत का ऋणी रहा है। यदि मानव जाति को सभ्यता का पाठ सबसे पहले किसी ने पढ़ाया तो वह थी भारतीय संस्कृति। परंतु पिछली कुछ शताब्दियों में भारतीय संस्कृति का पतन अनुभव में आया। आइए जानते हैं, वे कौन से क्षेत्र हैं जहाँ हमारी संस्कृति अपभ्रंश होती जा रही है। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

[https://docs.google.com/file/d/0B8n\\_36gK-KF4NmprYkw1Y1Nnazg/edit?usp=sharing](https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4NmprYkw1Y1Nnazg/edit?usp=sharing)



यह बात तो आज हर कोई जानता है कि भारत में विदेशी हमलों का दौर आज से लगभग 1100 वर्ष पहले से आरंभ हो गया था। यदि अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक संरचना को छोड़कर सांस्कृतिक स्तर पर बात की जाए तो यह समय हमारे लिए कुछ विशेष अच्छा नहीं रहा। आज हालात ये हैं कि न तो हम पूरी तरह अब स्वदेशी रह गए हैं और न ही पूरी तरह विदेशी। हमारी संस्कृति अब एक ऐसी खिचड़ी का रूप ले चुकी है जिसमें से हम स्वयं की पहचान को इंगित नहीं कर सकते। कुछ क्षेत्र हैं जहाँ हमने खुद को बहुत कमज़ोर बना लिया है:

### भाषा

सबसे बड़ा जो अधिपतन हमें देखने को मिला, वो है भाषा के क्षेत्र में हमारा पतन। 300 साल अंग्रेज़ों की गुलामी के बाद अंग्रेज़ तो चले गए परंतु यह अंग्रेज़ियत यहीं रह गई। आज आप किसी भी सरकारी दफ्तर,

अस्पताल या न्यायालय चले जाएँ, आप को सारी व्यवस्था अंग्रेज़ी भाषा में मिलेगी। आप जिस काम को अपनी स्थानीय मातृभाषा जैसे गुजराती, तमिल, असमी, भोजपुरी आदि में कर सकते हैं और समझ सकते हैं, सरकार आपको उसी भाषा में व्यवस्था करके नहीं दे सकती! इसका दुष्परिणाम यह है कि एक साधारण व्यक्ति तथा व्यवस्था के बीच पारदर्शिता का अभाव हो जाता है और सामाजिक क्रियाकलाप शिथिल पड़ जाते हैं, जागरूकता की कमी से।

यदि हम बात करें शिक्षा व्यवस्था की, तो सरकारी आँकड़े बताते हैं कि भारत में 18 करोड़ बच्चे प्रतिवर्ष प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के लिए दाखिला लेते हैं और उनमें से केवल 1 करोड़ बच्चे ही अपनी शिक्षा उच्च स्तर तक पूरी कर पाते हैं। बाकी 17 करोड़ बच्चे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। इसका सबसे प्रमुख कारण है अंग्रेज़ी माध्यम। Dr. Kothari तथा RamMoorthy commission की बात यदि हम मानें तो बाकी बचे 17 करोड़ बच्चे भी अपनी शिक्षा पूरी लें यदि भाषा का माध्यम अंग्रेज़ी न होकर स्थानीय भाषा अथवा हिन्दी हो।

भारत में 1% से भी कम लोग अंग्रेज़ी समझते हैं। अब यदि ऐसा कोई व्यक्ति किसी chemist से दवाई लेने जाता है और chemist से उस दवाई के side-effect या दुष्परिणाम पूछता है तो chemist या तो उसे बताएगा नहीं और बताएगा भी तो ऐसी शब्दावली में समझायेगा जो उस व्यक्ति के सिर के ऊपर से निकाल जाएगी! ऐसे में व्यक्ति सोचता है कि दुष्परिणाम समझने से ज्यादा आसान तो दवाई खा लेना ही है। यही हाल आपको डॉक्टरों के यहाँ भी देखने को मिलेगा। आप रूस, जर्मनी, जापान या यूरोपीय देशों (इंग्लैंड को छोड़कर) चले जाएँ, सभी जगह आपको prescription से लेकर दवाईयों पर छपे नाम स्थानीय भाषा में ही मिलेंगे ताकि सभी लोग समझ सकें। पूरे विश्व में एक अद्भुत देश भारत ही है जहाँ 1% से भी कम लोग अंग्रेज़ी समझते हैं लेकिन भारत की सरकार ने prescription और दवाओं पर छपाई के लिए अंग्रेज़ी को अनिवार्य कर रखा है! यह कृत्य जान बूझकर अपनी देशवासियों को मौत के मुँह में धकेलने जैसा है।

एक ग्रामीण व्यक्ति की कल्पना कीजिए जिसे अंग्रेज़ी नहीं आती। अब इस व्यक्ति पर जब अन्याय होता है तो यह एक वकील के माध्यम से अपनी बात न्यायालय में रखता है। वह अपनी स्थानीय भाषा में वकील को समझाता है जिसे वकील अंग्रेज़ी में अनुवाद कर न्यायाधीश को समझाता है। न्यायाधीश फिर अंग्रेज़ी में कुछ पूछता है और वकील अनुवाद कर स्थानीय भाषा में ग्रामीण व्यक्ति से पूछता है। इस तरह पूछने और समझाने में, आप कल्पना कीजिए कि कितने समय और ऊर्जा की बर्बादी होती है! एक छोटा सा काम नहीं कर सकते कि अदालत की सारी कार्यवाही स्थानीय भाषा अथवा हिन्दी में कर दी जाए, तो देश का कितना अमूल्य समय और धन बचेगा! आदमी अपनी पसीने की कमाई से केस लड़ता है और फैसला थोपा जाता है विदेशी भाषा में!

भाषा की यह गुलामी हमारी मानसिक गुलामी की परिचायक है। हम शारीरिक रूप से गुलाम भले ही न हों, परंतु इस मानसिक गुलामी से स्वयं को मुक्त करना और भी ज्यादा जरूरी है। इस भाषा के बल पर भारत कभी

विकास नहीं कर सकता! यही कारण ही कि संयुक्त राष्ट्र संघ की मानवाधिकार रिपोर्ट के अनुसार भारत का स्थान 134वीं पायदान पर है क्योंकि यह देश अपने लोगों को उनकी भाषा में भी न्याय नहीं दे सकता! भारत की छोटी से छोटी स्थानीय भाषा भी अंग्रेज़ी से बड़ी है। कारण सीधा सा यह है कि विचारों की अभिव्यक्ति स्थानीय भाषा में जितनी अच्छी हो सकती है वो विदेशी भाषा में कभी नहीं हो सकती! भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार व्याकरण की दृष्टि से सबसे कमज़ोर भाषा अंग्रेज़ी है। संयुक्त राष्ट्र संघ की भी औपचारिक भाषा फ्रेंच है, अंग्रेज़ी में केवल अनुवाद किया जाता है। इस बात में कोई दो राय नहीं कि भारतीयों का उत्थान स्वदेशी में ही निहित है।

## भूषा

अंग्रेजियत में डूबे व्यक्तियों ने पहले तो अपनी भाषा बदली तथा उसके बाद जो चीज़ बदली, वह थी भूषा! हमने अंग्रेज़ों की नक़ल करके कोट, पेंट, टाई, सूट डालना शुरू कर दिया। आप भारत के व्यावसायिक क्षेत्र में जाएँ तो यह वेशभूषा अब दफ़्तरों में भी अनिवार्य हो गई है। आप जानते होंगे कि पश्चिमी देश उत्तरी ध्रुव के निकट होते हैं जिस कारण वहाँ 12 मास सर्दी रहती है। प्रशांत तथा अटलांटिक महासागर से उठने वाली शीतल लहरें, इन देशों में तापमान को बढ़ने नहीं देती। ऐसे में कोट, पेंट, टाई, लॉन्ग कोट तथा 3 पीस सूट उनकी जलवायु के अनुसार उपर्युक्त भूषा है ताकि वे ठण्ड से बचे रहें। वहीं भारत जैसे देश में जहाँ तीन चौथाई इलाके में या तो गर्मी पड़ती है या भीषण गर्मी पड़ती है, ऐसे पहनावे का अनुसरण मूर्खता नहीं तो और क्या कहा जाएगा? ऐसे गर्म देश में जलवायु के अनुसार ऐसी भूषा होनी चाहिए जो शरीर के लिए अनुकूल हो अर्थात् ढीले वस्त्र जिनमें हवा भर सके या आर-पार हो सके। परंतु यहाँ तो सूट पहनना मजबूरी है और tight जींस, टी शर्ट फैशन है! इसे आप बुद्धिमानी कहेंगे कि पहले ऐसे बेटुके कपड़े पहनो और फिर चर्म रोग होने पर क्रीम रगड़ो?

भारत में धोती का चलन बहुत पुराना तथा वैज्ञानिक है। पैरों के लिए जूतियाँ या खड़ाऊँ पहनी जाती रही हैं। यह भूषा शारीरिक तापमान को भारतीय जलवायु में वायु की सहायता से नियंत्रित रखती है जिससे व्यक्ति स्वस्थ रहता है और प्रसन्नता का अनुभव करता है। दूसरी ओर यह भूषा हमारी सभ्यता और संस्कृति की चिन्ह भी है जिसे पहनने से व्यक्ति शिष्ट, सभ्य तथा संस्कारवान दिखता है। आप धोती के पहनने के तरीके से बता सकते हैं कि अमुक व्यक्ति कहाँ से है।

## भोजन

एक और जगह जहाँ हमने अपनी संस्कृति का नाश कर दिया है, वो है भोजन! यदि आप अपने पैदा होने से मरने तक के दिन गिन लें तो इतने व्यंजन हमारी संस्कृति ने हमें दिए हैं जो हम रोज़ बना कर खा सकते हैं। जिस देश में हज़ारों सालों से गेहूँ का आटा बनाकर रोटी खाने की व्यवस्था हो, वहाँ अब हम पाव और डबल रोटी पर निर्भर रहने लगे हैं। अंग्रेज़ों की तो विवशता है कि वे गेहूँ के आटे का केवल एक ही प्रयोग जानते हैं, परंतु

हमारे सामने कौन सी विवशता है? विज्ञान कहता है कि आटे के गीला होने के 48वें मिनट में उसकी रोटी बन जानी चाहिए तथा रोटी बनने के 48वें मिनट में उसे खा लेना चाहिए! जिस पाव-डबल रोटी पर हम आज कल निर्भर रहने लगे हैं, उसे आटे को सड़ाकर बनाया जाता है वरना वो तैयार नहीं हो पायेगी! यह बात आप में से बहुत लोग जानते भी होंगे।

आज हमारे देश की मानसिकता ऐसी विचित्र हो गई है कि ताज़ी रोटी खाना पिछड़ापन समझा जाता है और बासे-सड़े हुए अनाज के बनाये हुए बर्गर, पिज़्ज़ा, हॉट डॉग जैसे पदार्थों को खाना status symbol समझा जाता है! हम स्वयं ही इस मूर्खता के लिए उत्तरदायी हैं। भारत तो वो देश है जहाँ रोज़ ताज़ी सब्जियां बेचने के लिए व्यक्ति खुद आप के घर तक आता है। कभी पश्चिमी देशों में जाकर देखिए, जहाँ ताज़ी सब्जियां वो कही जाती हैं जो 7-10 दिन पुरानी हों! इन्हें खरीदने के लिए व्यक्ति 10-40 मील का रास्ता नाप कर departmental store से खरीदकर आते हैं। 12रु किलो टमाटर की ताज़ा चटनी नहीं बनायेंगे परंतु 235रु किलो की Maggi Ketchup शान से खाएंगे और कहेंगे, It's different! 3 महीने पुराने सड़े हुए टमाटरों को जहरीले preservatives के साथ 20 गुणा अधिक दाम पर आप खरीद रहे हैं, यही है difference!

बेहद शर्म और अफ़सोस की बात है, जिस देश ने संसार को अन्न पैदा करना और खाना सिखाया आज उसी देश में लोग खाना पकाने और खाने की शिष्टता भूलते जा रहे हैं! आज शहर में महिलाएं, वो भी खासकर इसी पीढ़ी की, कुछ पकाना नहीं जानतीं। सब पका पकाया चाहिए! यही कारण है कि वर्तमान जीवन शैली ऐसी हो गई है कि घरों में बीमारियों की बारात लगी रहती है और आधा जीवन शरीर के ही साथ युद्ध में ही बीत जाता है! यह आलस्य, पाश्चात्य जीवन शैली के अंधानुकरण का ही दुष्परिणाम है!

### गीत-संगीत

संगीत के तीन प्रमुख अंग होते हैं – गायन, वादन तथा नृत्य। भारत अपने शास्त्रीय संगीत के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में स्थानीय संगीत, शास्त्रीय संगीत के ही विभिन्न रूप हैं जो उस स्थान विशेष की जलवायु से सम्बंधित हैं। उदाहरणार्थ यदि आप पहाड़ी इलाकों पर देखें तो वहाँ नृत्य तथा संगीत हल्का होता है। वहीं मैदानी इलाकों में पद-संचालन तेज़ होता है, जैसे कथक। अर्थात् भारतीय गीत-संगीत में आपको तर्क का समावेश मिलेगा जो आपको मानसिक शांति प्रदान करने में सक्षम होगा।

आज के दौर में हमारा देश, खासकर युवा जिस प्रकार के पाश्चात्य संगीत का अंधाधुंध अनुसरण कर रहा है, वह संगीत की सभी मर्यादाओं को तोड़ता हुआ मानसिक क्लेश का कारक है! अश्लील शब्दावली और नृत्य हो या कान-फोड़ संगीत, दोनों ही मानसिक कुवृत्तियों जैसे अपराध और दुर्भावनाओं को उकसाते हैं! 4 युवा यदि मिलकर एमिनेम या माइकल जैक्सन की तारीफ कर रहे होंगे तो 5वाँ युवा खुद को हीन महसूस करेगा क्योंकि वह दोनों

ही के बारे में नहीं जानता। उसके बाद उसकी समझ में कुछ आए या न आए, वह जबरदस्ती उस संगीत को सुनेगा खुद को हीनता से उबारने के लिए। यह हालत है हमारे देश के पढ़े लिखे युवाओं की! कहाँ की समझदारी है यह? 1980 के दशक तक थोड़ा बहुत संगीत फिल्मों में उपयोग हो भी जाता था परंतु आज जो दौर है उसे संगीत के नाम पर सर्वनाश ही कहा जाए तो उचित होगा!

### साहित्य

साहित्यिक क्षेत्र में यदि हम देखें तो पाएँगे कि अब हर वस्तु को पश्चिम से चुराकर चाहे वह वस्तुनिष्ठ हो या नहीं, अंधाधुंध तरीके से कॉपी किया जा रहा है। फिल्म कहानियों की चोरियों से तो आप परिचित होंगे ही। लेखों और नाटकों में भी यही हाल देखने को मिलता है। कल्पनाशीलता का कोई मूल्य अब नहीं रह गया है भारत जैसे देश में! सिर्फ चुराओ और बेचो फिर वो चाहे संगीत हो, फिल्म हो, साहित्य हो या टीवी प्रोग्राम हो। इसी चोरी में एक मुद्दा भारत में आ पहुँचा जिसका नामो निशान हमारे देश में आज से 20 साल पहले तक कहीं भी नहीं था। वह मुद्दा है समलैंगिकता! यह एक ऐसी मानसिक बीमारी है जो पश्चिमी देशों से लेखों और जीवन शैली के मार्ग से भारत में प्रवेश कर गई।

पाश्चात्य देशों का दर्शन कहता है कि शारीरिक सुख ही जीवन का परम सुख है, जो इसे न पा सका उसका जीवन नष्ट हुआ समझो! यही कारण है कि अरस्तु, प्लेटो जैसे विद्वान कहे जाने वाले प्राणियों ने स्त्री को निष्प्राण और भोगमात्र की वस्तु कहा। उनका मानना है कि जब इन्द्रिय सुख के एक तरीके से ऊब जाओ तो दूसरा तरीका अपना लो, यही कारण है कि वहाँ का समाज अब दो तरह के लोगों में विभक्त हो गया है – समलैंगिक और गैर-समलैंगिक। उनके समाज में यह एक बहुत बड़ा मुद्दा है इसलिए अमरीका जैसे देश के राष्ट्रपति को चुनाव जीतने के लिए समलैंगिकों के विशेष अधिकारों पर भी आश्वासन देना पड़ता है! परंतु दिक्कत तो यह है कि भारत जैसे देश में जहाँ ईश्वर प्राप्ति को सर्वोच्च सुख अथवा परमशांति माना जाता है, वहाँ ऐसी विकृत विचारधारा को जगह मिली कैसे? यहाँ अनंत काल से नारी को पुरुष के तुल्य और पूजनीय माना जाता है। विदेशी मीडिया बहुत सोचे समझे षड्यंत्र के तहत भारतीय समाज, खासकर शहरी, को भी दो भागों में विभक्त कर एक बाज़ार खड़ा करने की चेष्टा में है जहाँ समलैंगिक लोगों का सामान निर्यात किया जा सके।

### महिलाओं के प्रति नजरिया

भारतीय संस्कृति में स्त्रियों का स्थान क्या है, वह निम्नलिखित श्लोक से पता लगाया जा सकता है:

“यत्र नारयस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवताः॥”

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का (शांति) का वास होता है। परंतु यदि आप भारत के इतिहास पर नज़र डालें तो आप पाएँगे कि जब से भारत में विदेशी हमले होने शुरू हुए, तब से समाज में स्त्रियों के प्रति पुरुषों की दृष्टि का स्तर नीचे गिरता चला गया। मुगल काल से शुरू हुआ पतन, अंग्रेज़ी शासन तक अधिपतन में परिणत हो गया! 1947 में आज़ादी के बाद इस स्थिति में सुधार होना चाहिए था लेकिन इस अंग्रेजियत की गुलामी के कारण हालात आज और भी बदतर हो गए हैं! पाश्चात्य जगत में कहा गया है कि स्त्री में आत्मा नहीं होती। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि रोमन साम्राज्य में 3 स्त्रियों की गवाही को एक पुरुष की गवाही के समतुल्य समझा जाता था! 1950 तक पूरे यूरोप में स्त्रियों को वोट डालने का अधिकार नहीं था। उन्हें मात्र भोग की वस्तु समझा जाता था। आज पश्चिमी देश तो इस विचारधारा से धीरे धीरे निकाल रहे हैं परंतु स्त्रियों को पूजने वाला देश भारत अंग्रेजियत के इस घिनौने चक्रव्यूह में न केवल फँसता जा रहा है बल्कि स्त्रियों के ऊपर होने वाले अत्याचारों में विश्व कीर्तिमान भी स्थापित करता जा रहा है! यही कारण है कि हमारे देश में हर घंटे 3 महिलाओं के साथ दुष्कर्म हो जाता है। यह सिलसिला बदस्तूर हर दिन जारी है!

एक छोटी सी बात जो हमें समझनी है वो यह, अपने पैरों के लिए हमें अपना ही जूता पहनना होगा! अपनी संस्कृति को मूल में रखकर विकास करना होगा और किसी भी तरह के नकारात्मक प्रभाव से पहले खुद को तत्पश्चात समाज को बचाना होगा!

--इति--